८२: व्यवहार शुद्धि

२४.०६.१३

व्यवहार शुद्धि का मतलब अनुभवमूलक विचार सम्मत होना है | अनुभव सम्मत विचार नहीं होने तक व्यवहार शुद्धि पूर्ण होता नहीं | अभी तक का मानव जो कुछ भी किये, जीवों से अच्छा जीने के लिये किये | उसमें सफल हो गये | सफलता का स्वरूप आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन रूप में स्पष्ट हुआ | इसको हर व्यक्ति समझ सकते हैं | हर देश काल में समझ सकते हैं | इसमें कोई शंका नहीं | इसीलिये विकल्प उद्देश्य को प्रस्तुत किया | यह समझ में आने से कि जीवों से अच्छा जीना नहीं हुआ है तब जागृत चेतना ही एकमात्र उद्देश्य बनता है | चेतना जागृति साक्षात्कार, बोध एवं अनुभवमूलक विधि से ही होता है | दूसरा कोई विधि से चेतना जागृति होता ही नहीं |

यही ज्ञान है | सार्वभौम वस्तुओं का ही ज्ञान होता है | बाकी सब तर्क और कल्पना में हो जाता है | इसलिये इसको सार्वभौमता के अर्थ में पहचाना है | सार्वभौमता सदा के लिये बनता है | अखण्डता के बिना सार्वभौमता होता ही नहीं | अखण्ड समाज के लिये मानव धर्म को पहचाना गया है | मानव धर्म का स्वरूप विकसित अथवा जागृत चेतना का प्रमाण ही है | इसका स्वरूप में लिखा है- स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार | दयापूर्ण कार्य मनुष्येतर प्रकृति के साथ | मानव के साथ दयापूर्ण व्यवहार के साथ स्वधन,स्वनारी/स्वपुरुष होता है |

इस क्रम में मानव अपना पहचान को बनाए रखता है, जीवों से भिन्न रूप में, जीवों से श्रेष्ठ रूप में | इसीलिये विकल्प का प्रयास हुआ | विकल्प विधि से ही व्यवहार शुद्धि को पाते हैं | शुद्धता की परिकल्पना पहले से ही हुआ है | आहार शुद्धि, विचार शुद्धि, कार्य शुद्धि के बारे में सोचा गया है जिसका आधार सुस्थिर न होने के कारण सार्थक नहीं हो पाया | सार्थक नहीं होने का मतलब प्रचलित न होने से है | इस प्रकार हम भटक गये हैं | इसका कारण एक ही रहा, आदर्शवाद सदा के लिये रहस्य में फंसे होने से स्पष्ट नहीं हो पाना | इसी कारणवश आदर्शवाद पीछे हो गया, भौतिकवाद आगे हो गया | भौतिकवाद शुरुआत में ही अपराध में फंसा है |

अपराध को हम समझा है, यह तीन प्रकार से उन्माद , दो प्रकार से अपराध है | तीन प्रकार का उन्माद- लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद है | यह भ्रमवश होता है | संघर्ष और युद्ध यह दोनों अपराध है | इनको मैंने पहचाना है | अभी संसार पहचानना शेष है | इस आधार पर हम भ्रमित और अपराधी हो गये | यह सभी संविधान स्वीकारा है, तीनों भ्रमों को, दोनों अपराधों को | संघर्ष को विकास का आधार माना है, जबकि अपराध करने से इसमें हम कैसे न्यायिक हो जाएंगे | दोनों पक्ष का अथवा एक से अधिक पक्ष का संतुष्टि मिलना ही न्याय है |

यह न्यायपूर्वक जीने की विधि से ही स्पष्ट होता है | न्याय को हमने पहचाना है | यह तीनों प्रमाणों के रूप में हैं- अनुभव प्रमाण, अनुभव सम्मत विचार प्रमाण, ऐसे अनुभव विचार सम्मत व्यवहार प्रमाण से है | यह परस्पर न्याय का आधार है | इसके विपरीत जाना ही भ्रम है, अपराध है | इस क्रम में जागृत चेतना ही एकमात्र शरण होता है |

जागृत चेतना विधि से ही ये तीनों प्रमाण प्रमाणित होते हैं | तीनों प्रमाणों का प्रमाण ही न्याय का स्वरूप है | इसे देख लिया है | अर्थात जागृत चेतना सदा के लिये मानव परम्परा को तरण-तारण विधि से, तरा हुआ तारने की विधि से सार्थक होता है | इस विधि से मानव चेतना को पहचानना सम्भव हो गया है | मानवीयतापूर्ण जीवन में विकसित चेतना के रूप में मानव चेतना पूर्वक शुद्ध व्यवहार, यही अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होता है | मानव चेतना विधि से व्यवहार शुद्धि होना पाया जाता है | यही अनुभव मूलक विधि से पूर्ण होता है | जीव चेतना विधि से व्यवहार शुद्धि होता नहीं | जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण हेतु ही अध्ययन है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज